IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसंधान प्रतिमान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ शैलेश कुमार यादव

सहायक आचार्य

शिक्षा शास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

अमरीन शमशुल

शोधार्थी

शिक्षा शास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

शोधसार–

अनुसंधान प्रतिमान एक व्यापक विश्वास प्रणाली, विश्व दृष्टिकोण या ढांचा है जो किसी क्षेत्र में अनुसंधान और अभ्यास का मार्गदर्शन करता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से एक प्रतिमान में प्रकृति का एक दृष्टिकोण शामिल होता है। वास्तविकता चाहे वह अज्ञात के लिए बाहरी हो या आंतरिक, उत्पन्न किया जा सकने वाले ज्ञान के प्रकार का एक संबंधित दृष्टिकोण और इसे उचित ठहरने के लिए मानक और ज्ञान को उत्पन्न करने के लिए एक अनुशासित दृष्टिकोण और कार्य प्रणाली है। अनुसंधान प्रतिमान अपनी मान्यताओं और सिद्धांतों के माध्यम से वैज्ञानिक खोज का मार्गदर्शन करता है। अनुसंधान प्रतिमान वैज्ञानिकों के बीच साझा की जाने वाली सामान्य मान्यताओं का समूह है, की समस्याओं को कैसे समझा और संबोधित किया जाना चाहिए। यह लेख प्रत्यक्षवाद, पूर्व प्रत्यक्षवाद, व्याख्यावाद, रचनावाद और व्यवहारवाद शोध प्रतिमान पर ध्यान केंद्रित करता है इसकी परिभाषा, इतिहास और मान्यताओं की चर्चा करता है और अनुसंधान प्रतिमानों के प्रमुख पहलुओं को भी स्पष्ट करता है और प्रत्येक प्रतिमान में अनुसंधान करने के लिए सबसे उपयुक्त विभिन्न अनुसंधान पद्धतियों पर भी चर्चा करता है।

मुख्य शब्द– शोध प्रतिमान, प्रत्यक्षवाद, पूर्व प्रत्यक्षवाद, अनुसंधान पद्धतियां।

प्रस्तावना–

अनुसंधान विभिन्न घटनाओं पर जांच का एक व्यवस्थित और संगठित दृष्टिकोण है। यह उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से शोधकर्ता शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करता है। अनुसंधान शब्द को विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है (क्रसवेल,2012) "अनुसंधान को किसी विषय या मुद्दे के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने के लिए, जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने के लिए उपयोग किए जाने वाले चरणों की एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है" यहां, क्रसवेल अनुसंधान को आंकड़ों के संग्रह और विश्लेषण के माध्यम से कुछ मुद्दों को समझने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के रूप में मानते हैं।

वहीं दूसरी ओर सरल शब्दों में शोध प्रतिमान शोध कार्य के लिए सैद्धांतिक या दार्शनिक आधार को संदर्भित करता है इसे एक शोध दर्शन के रूप में देखा जाता है। अमेरिकी दार्शनिक थॉमस कूहन,1962 ने पहली बार अनुसंधान के क्षेत्र में

प्रतिमान शब्द का उपयोग शैक्षिक अनुसंधान में सोचने के दार्शनिक तरीके के लिए किया था, प्रतिमान शब्द का उपयोग एक शोधकर्ता के विश्व दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो अनुसंधान आंकड़ों के अर्थ या व्याख्या को सूचित करता है। अनुसंधान प्रतिमान उन अमूर्त मान्यताओं और सिद्धांतों का गठन करता है जो एक शोधकर्ता को दुनिया को देखने के तरीके को आकार देता है, कि वह कैसे उसकी व्याख्या करता है। **(एम, और जूरी, 2023)** तर्क देते हैं कि एक प्रतिमान समस्याओं के अस्तित्व के तरीकों के बारे में विश्वासों का एक समूह है। अनुसंधान प्रतिमान परीघटनाओं को देखने के लिए एक बुनियादी और व्यापक विश्वास प्रणाली है।

अनुसंधान के विभिन्न प्रतिमान–

अनुसंधान का प्रत्यक्षवादी प्रतिमान–

प्रत्यक्षवाद एक प्राथमिक परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए काल्पनिक निगमनात्मक विधि पर निर्भर करता है जिसे अक्सर मात्रात्मक रूप में कहा जाता है जहां कारण और व्याख्यात्मक कारक और परिणाम के बीच कार्यात्मक संबंध प्राप्त किए जा सकते हैं। हालांकि प्रत्यक्षवादी शोध हमेशा मात्रात्मक तरीकों पर निर्भर नहीं होता है उदाहरण के लिए गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से हस्तक्षेप के प्रभावों की जांच करने वाला एक प्रयोगात्मक अध्ययन प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के लिए उपयुक्त होता है। प्रत्यक्षवाद का इतिहास 17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रबुद्धता काल का है जो दार्शनिक लॉक से प्रेरित है **(यंग,के.डब्ल्यू.2021)** अगस्त कॉम्टे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अनुसंधान की तत्कालीन मौजूदा वैज्ञानिक पद्धति को नव स्थापित सामाजिक विज्ञान पर लागू किया उनके अनुसार, मानव ज्ञान तीन चरणों से होकर गुजरता है, धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक। पहले दो चरणों में, मन अपने शोध को पूर्ण ज्ञान की ओर निर्देशित करता है क्योंकि, यह पूर्ण ज्ञान आध्यात्मिक है वैज्ञानिक नहीं, अगस्त कॉम्टे का मानना है कि तर्क और अवलोकन के संयुक्त प्रयोग द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की वैज्ञानिक विधि ही किसी घटना के वास्तविक नियमों की खोज करने का एकमात्र तरीका है। दुर्खीम, जे. एस. मिल और अन्य लोगों ने कॉम्टे के प्रत्यक्षवादी दर्शन को अपनाया और लोगों की आंतरिक कार्य प्रणाली का पता लगाने या समझने के किसी भी प्रयास को पूरी तरह से त्याग दिया और केवल घटनाओं के बीच अवलोकन योग्य अनुभवजन्य संबंधों या कानून को स्थापित करने से चिंतित थे।

प्रत्यक्षवाद ने सामाजिक विज्ञानों के लिए मुख्य कार्य को वर्तमान व्यवहार के अध्ययन के आधार पर कारण संबंधी स्पष्टीकरण और भविष्य के व्यवहार की भविष्यवाणी करना माना। प्रत्यक्षवाद एक ज्ञान मीमांसा सिद्धांत है जो मानता है कि भौतिक और सामाजिक वास्तविकता है। प्रत्यक्षवादी प्रतिमान यह मानता है कि केवल एक ही वास्तविकता है जिसे मापा और समझा जा सकता है। इसलिए, ऐसे शोधकर्ता अपने अध्ययन में मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करने की संभावना रखते हैं। प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के अनुसार, अनुसंधान एक अनुभवजन्य प्रक्रिया है जिसे बाद में आंकड़ा संग्रह और विश्लेषण के माध्यम से समर्थन या खंडन किया जाता है। प्रत्यक्षवादी अनुसंधान को वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से देखते हैं और मात्रात्मक संबंधों की सांख्यिकीय जांच करते हैं, बजाय इसके कि वे इन संबंधों के पीछे के गुणात्मक कारणों की खोज करें। इस प्रतिमान को मानने वाले शोधकर्ता यह भी विश्वास करते हैं कि समान परिस्थितियों में अध्ययन के परिणामों को सामान्यीकृत करने के लिए प्रत्यक्षवादी शोध का व्यापक रूप से उपयोग किया जा सकता है। **(रहमान, ए. ए. और अलहर्थी, के. 2016)**

प्रत्यक्षवादी शोध प्रतिमान की मान्यताएं–

प्रत्यक्षवादी शोध में परिलक्षित धारणाएं स्वतंत्र वास्तविकता की धारणा पर आधारित है। प्रत्यक्षवादी शोध की निम्नलिखित मान्यताएं हैं जैसे–

1.भौतिक दुनिया और सामाजिक घटनाएं इस मायने में समान है की शोधकर्ता सामाजिक घटनाओं का अध्ययन इस तरह से कर सकते हैं जैसे वे बहुत सी घटनाओं का करते हैं।

2.सिद्धांत सार्वभौमिक है और सिद्धांतों और अनुमानों के सेट व्यक्तियों और सेटिंग में मानव व्यवहार और घटनाओं का वर्णन कर सकते हैं।

3.सामाजिक घटनाओं की जांच में शोधकर्ता विषयवस्तु व्रत का पालन करते हैं जिसमें वह अपने शोध विषयों से अलग खड़े होते हैं और उन्हें एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में मानते हैं।

4.ऐसे सिद्धांतों और चरणों का उपयोग करके ज्ञान को औपचारिक बनाने की आवश्यकता है जो परिचालन रूप से एक दूसरे से भिन्न हो और तदनुसार परिभाषित हो।

5.सिद्धांतों के बारे में परिकल्पनाओं का परीक्षण अवलोकनों के प्रमाणीकरण और सांख्यिकी विश्लेषण के प्रयोग द्वारा किया जाता है।

प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के अंतर्गत उपयोग होने वाली शोध पद्धतियां–

1.प्रयोग पद्धति

2.सहसंबंध पद्धति

3.कारण तुलनात्मक पद्धति

4.यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण पद्धति

5.सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति

पूर्व प्रत्यक्षवादी प्रतिमान–

प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण की विभिन्न कमजोरीयों और सीमाओं के परिणाम स्वरूप पूर्व प्रत्यक्षवाद दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ। पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध आलोचनात्मक यथार्थवाद नामक दर्शन से प्रभावित है। **(सुजिन,किम.2003)** पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध का उपयोग शोधकर्ताओं को उन कारण की पहचान करने और उनका पालन करने का अवसर प्रदान करता है जो परिणाम को प्रभावित करते हैं **(चार्ल्स, के. और अहमद, बी. 2017)** ।

पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध विभिन्न प्रकार की जांचों के माध्यम से शोध योग्य तथ्यों की विविधता का पता लगाने के लिए गुणात्मक एवं मात्रात्मक तरीकों के त्रिकोणीकरण को बढ़ावा देते हैं। पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध के माध्यम से उत्पन्न ज्ञान वस्तुनिष्ठ वास्तविकता के सावधानी पूर्वक अवलोकन और मापन पर आधारित है। पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध के संदर्भ में स्टीवन का कहना है "कि सामाजिक विज्ञानों को विज्ञान के दायरे में शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया। पूर्व प्रत्यक्षवादी इसलिए मानते हैं कि सामाजिक वास्तविकता मापने योग्य वस्तुनिष्ठ तथ्यों से बनी है जिसे एक शोधकर्ता कारण संबंधों का परीक्षण करने के लिए आंकड़ों का उपयोग करके सटीक रूप से माप सकता है" **(स्टीवन,इ. के.2005)**।

पूर्व प्रत्यक्षवादी प्रतिमान की मान्यताएं–

पूर्व प्रत्यक्षवादी शोध की निम्नलिखित मान्यताएं हैं जैसे–

1.अनुसंधान विशिष्ट होने के बजाय व्यापक है बहुत सारी अलग–अलग चीज अनुसंधान के योग्य है।

2.सिद्धांत और व्यवहार को अलग नहीं रखा जा सकता हम सिर्फ तथ्यों के लिए सिद्धांतों को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं।

3.अनुसंधान के लिए शोधकर्ताओं की प्रेरणा और प्रतिबद्धता उद्यम के लिए केंद्रीय और महत्वपूर्ण है।

4.यह विचार की अनुसंधान केवल जानकारी एकत्र करने और वर्गीकृत करने की सही तकनीक से ही संबंधित है, अब अपर्याप्त है **(एम, और जूरी,2023)**।

पूर्व प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के अंतर्गत उपयोग होने वाली शोध पद्धतियां–

1.प्रकृतिवादी पद्धति

2.कथात्मक पूछताछ पद्धति

3.केस अध्ययन पद्धति

4.ग्राउंडेड थिअरी पद्धति

5.घटना विज्ञान पद्धति

6.क्रियात्मक अनुसंधान पद्धति

व्याख्यावाद–

व्याख्यावाद लोगों के व्यक्तिपरक अनुभवों के आधार पर वास्तविकता में विश्वास करते हैं। व्याख्याकारों का मानना है कि ज्ञान के लिए कोई एक सही मार्ग नहीं होता है, और कोई भी वस्तुनिष्ठ ज्ञान, सोच मानवी तर्क से स्वतंत्र नहीं है इसलिए वह अपने निर्माण को क्षेत्र से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार विज्ञान के प्रति वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का खंडन करते हैं। व्याख्यावाद शोधकर्ताओं का आधार यह है कि वास्तविकता तक पहुंच केवल भाषा, चेतना जैसे सामाजिक निर्माण के माध्यम से होता है जिसका अर्थ है कि वह तरीका जिससे कोई व्यक्ति अपने पास मौजूद चीजों की व्याख्या करता है यह किसी घटना के सभी चरणों के साथ उसके पूर्ण विवरण के बारे में है जिसे अच्छी तरह से पहचान, व्याख्या और वर्णित किया गया है कि संपूर्ण शब्द पढ़ा या देखा जा सकता है।**(चार्ल्स,के. और अहमद,बी.2017)**

व्याख्यावाद ऐसे तरीके अपनाते हैं जो उन्हें गुणात्मक आंकड़ा उत्पन्न करने में सक्षम बनाते हैं हालांकि इस प्रक्रिया में संख्यात्मक आंकड़े उत्पन्न किए जा सकते हैं, परंतु इस पर भरोसा नहीं किया जाता है। गुणात्मक शोध में संख्यात्मक आंकड़ा का उपदेश निष्कर्ष निकलना नहीं है गुणात्मक संख्याएं वर्णन योग्य है, जिसका उद्देश्य किसी भी मामले में अध्ययन के तहत घटना की समझ को कठोरता प्रदान करना है। टिप्पणियों, नोट्स, दस्तावेज विश्लेषण का उपयोग किया जाता है लेकिन इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। गुणात्मक शोध में संख्यात्मक आंकड़ों का उद्देश्य निष्कर्ष निकालना नहीं है इसका उद्देश्य किसी घटना के बारे में गहराई से जानकारी एकत्रित करना है, उन बातों के अलावा, व्याख्यात्मक प्रतिमान की आलोचना की गई है क्योंकि, यह ऐसे सिद्धांत देने में असमर्थ है जिन्हें बड़ी आबादी के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है और प्रतिभागियों के साथ शोधकर्ता की भागीदारी के कारण वस्तुनिष्ठता की कमी होती है **(ग्रीक्स,जे.2000)**।

रचनावाद–

रचनावाद या सामाजिक रचनावाद इस पर आधारित है कि लोग अपने अनुभवों, व्यक्तिगत अर्थ के विकास के माध्यम से उस दुनिया को समझना चाहते हैं जिसमें भी वो रहते हैं। **(एंटोनी,आर.ए.एट.ऑल.2020)** एक रचनावादी का उद्देश्य प्रतिभागियों के विचारों पर भरोसा करना है।

रचनावाद के समर्थक और आत्मसातकरण की परस्पर क्रिया के उनके सुझाव अनुभवों के एकीकरण के साथ–साथ समायोजन जो की आत्मसातकरण करने को सक्षम करने के लिए नए अनुभवों के आधार पर संज्ञानात्मक संशोधन से बनी है शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण से रचनावादियों का मानना है कि सीखना तभी होता है जब शिक्षार्थी प्रयोग के माध्यम से ज्ञान की खोज करते हैं जिसका अर्थ है कि सीखना कक्षा के सामने खड़े होकर पढ़ाने वाले शिक्षकों की पारंपरिक पद्धति से नहीं होता है **(कृष्ण,के.2020)** ।

व्यवहारवाद–

व्यवहारवाद गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोण को अपनाता है, इसलिए यह मिश्रित दार्शनिक प्रतिमान है **(चार्ल्स, के. और अहमद,बी.2017)** व्यावहारिकता द्वारा मिश्रित डिजाइनों का उपयोग शोधकर्ताओं को अध्ययन के तहत घटनाओं की गहन समझ रखने में सक्षम बनाता है। व्यावहारिकता उन व्यावहारिक सेटिंग में फिट बैठता है जहां जटिल सामाजिक घटनाएं होती है जो इसे मिश्रित अनुसंधान विधियो में सबसे आम प्रतिमान बनाती हैं **(कृष्ण,के.2020)**।

निष्कर्ष–

ऊपर प्रस्तुत जानकारी के आधार पर किसी भी अध्ययन के दृष्टिकोण को इंगित करने के लिए कई बिंदुओं पर विचार किया गया है इस पत्र के अंतर्गत विभिन्न अनुसंधान प्रतिमान जैसे प्रत्यक्षवाद, पूर्व प्रत्यक्षवाद, व्याख्यावाद, रचनावाद एवं व्यवहारवाद की चर्चा की गई है प्रत्येक प्रतिमान कुछ विशिष्ट मान्यताओं पर आधारित है और एक प्रतिमान का चुनाव उस प्रतिमान से निकलने वाली विशेष पद्धतियों के बारे में निश्चितता को दर्शाता है एक शोध प्रतिमान के भीतर कई शोध पद्धतियों को संयोजित किया जा सकता है विभिन्न अनुसंधान प्रतिमानों का ज्ञान अनुसंधान पद्धति पूर्वाग्रहों को कम कर सकता है और अनुसंधान की गुणवत्ता को लाभ पहुंचा सकता है। प्रतिमान एक शोध परियोजना में उपयोग की जाने वाली पद्धति पर महत्वपूर्ण प्रभाव भी डालते हैं।

संदर्भ ग्रंथ की सूची–

- एंटोनी, आर. ए. एट. ऑल. (2020). अनुसंधान के प्रत्यक्षवादी प्रतिमान का अध्ययन. जर्नल अमेरिकन मेडिकल कॉलेज, 9(55), 690–694।
- एम, और जूरी. (2023). शोध प्रतिमान और शोध के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड हुमन रिसर्च, 61(2), 7442–7454।
- चार्ल्स, के. और अहमद, बी. (2017). शैक्षिक संदर्भ में अनुसंधान प्रतिमानों को समझने और लागू करने के प्रति अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 6(5), 26–41।
- ग्रीक्स, जे. (2004). राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन. न्यू यॉर्क पलग्रावे मैकमिलन।
- कृष्ण, के. (2020). अनुसंधान प्रतिमान शैक्षिक अनुसंधान का एक दर्शन. जर्नल ऑफ इंग्लिश लिटरेचर एंड सोशल साइंस, 55(14), 351–440।
- रहमान, ए. ए. और अलहर्थी, के. (2016). अनुसंधान प्रतिमान की व्याख्या. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एज्युकेशनल इन्वेस्टिगेशन, 3(8), 51–59।
- सुजिन, कि. (2003). संघटनात्मक शिक्षा और पूछताछ के प्रतिस्पर्धी तरीकों के प्रदर्शन में अनुसंधान प्रतिमानों का अध्ययन. इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी लर्निंग एंड परफॉर्मेंस जर्नल, 21(1), 9–18।
- स्टीवन, इ. के. (2005). अनुसंधान प्रतिमान और अर्थ निर्माण एक प्राइमर, 10, 758–770।
- यंग, के. डब्ल्यू. (2021). अनुसंधान प्रतिमान की एक मार्गदर्शिका का अध्ययन करना. जर्नल ऑफ कंटेंपरेरी इश्यूज इन बिजनेस एंड गवर्नमेंट, 27(2), 5857–5865।